1) Lecture Series No:- 60,

Online class,
Date- [illegible]
Day-
Time- 10:50 to 11:40 A.M

Topic,

Dr. Surita Kumari
Depart. of Philosophy,
B.A Part - I
Paper - II (H.)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur,

(1) Refutation of

Ans:- बर्कले ने अपने दर्शन में ज्ञान के (सम्बन्ध) समस्त विषय को आत्मगत या मन पर निर्भर माना है। इसलिए उनके दर्शन को आत्मगत प्रत्ययवादी दर्शन कहा जाता है। आत्मगत प्रत्ययवाद से तात्पर्य उस सिद्धान्त से है जिसके अनुसार केवल मात्र मन और प्रत्यय के अस्तित्व को ही माना जाता है तथा इसके अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु के स्वतन्त्र अस्तित्व को नहीं माना जाता है। दूसरे शब्दों में समस्त प्रत्ययों को आत्मगत ही स्वीकार किया जाता है। बर्कले के सत्ता ठहरता है। ~~E. (Esse~~ (Esse Est percipi) से भी यही तात्पर्य है

P.T.O.

(2)

है कि अनुभवकर्ता अथवा द्रष्टा आत्मा है और अनुभव के विषय अर्थात् सत्ता प्रत्यय है। इस प्रकार मनस् या आत्मा और प्रत्यय के अतिरिक्त कुछ अन्य नहीं है। इसलिए सत्ता दृष्टिता है, उनके इस सिद्धांत के मुख्य तर्क निम्न प्रकार है—

संवेदनायें ह दृष्टता है; जैसा कि बर्कले की ज्ञान मीमांसा का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि उन्होंने ज्ञाता और ज्ञान से किसी प्रकार के द्वैत को स्वीकार नहीं किया है। क्योंकि उनके अनुसार ज्ञान से बाहर वस्तु का कोई अस्तित्व नहीं है। इसी आधार पर जिनको हम वस्तु समझते हैं, वे वास्तव में संवेदनायें या प्रत्यय है और संवेदनायें सदैव आत्मगत होती है।

END